17 पापी से महात्मा

महात्मा बुद्ध कहा करते थे– "पापी से घृणा मत करो। वह तो केवल अज्ञान का शिकार है। उसका सुधार प्रेम और सहानुभूति से हो सकता है।" महात्मा बुद्ध ने यह केवल कहा ही नहीं, बल्कि करके भी दिखा दिया।

कौशल प्रदेश में अंगुलिमाल नाम का एक भयंकर डाकू था। उसने एक हज़ार आदमियों को मारने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। जब वह किसी की हत्या करता तो उसकी एक अंगुली काटकर उसे माला में पिरो लेता था। इस प्रकार उसके पास अंगुलियों की माला बन गई थी, जिसे वह गले में पहने रहता था। इसीलिए उसका नाम अंगुलिमाल पड़ गया था।

एक बार महात्मा बुद्ध कौशल की राजधानी श्रावस्ती आए। वहाँ उन्होंने राजा प्रसेनजित को बहुत चिंतित पाया। कारण था राज्य में डाकू अंगुलिमाल का आतंक। प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। यह सुनकर मन ही मन महात्मा बुद्ध ने डाकू अंगुलिमाल को सुधारने की ठान ली और उसकी खोज में जंगल की ओर चल दिए।

उनके शिष्य आनंद ने बहुत रोका– "महात्मन! जंगल में प्रवेश मत कीजिए।"

महात्मा बुद्ध ने कहा–"आनंद, भय किसका! अंगुलिमाल हमारे जैसा सामान्य मनुष्य ही तो है। उसके अंदर भी आत्मा है।"

घने जंगल में पहुँचकर उन्हें एक गर्जनाभरी आवाज़ सुनाई दी–"ठहर जा!" महात्मा बुद्ध शांत स्वर में बोले–"मैं तो ठहर गया पर अपने कुकर्मों से तू कब ठहरेगा?" अंगुलिमाल विस्मित रह गया। "यह कैसा मनुष्य है, भयभीत होने के बजाय मुझे ठहरने को कहता है।" वह तेज़ी से महात्मा बुद्ध की ओर बढ़ा, परंतु ठोकर खाकर ज़मीन पर गिर गया। महात्मा बुद्ध ने प्यार से उसे उठाया और पूछा–"अधिक चोट तो नहीं लगी?"

अंगुलिमान ने सिर उठाकर महात्मा बुद्ध को देखा। उनके तेजस्वी मुख-मंडल की आभा उसके मन में उतर गई।

अंगुलिमाल इस सहानुभूति और प्रेम को देखकर चकित रह गया। वह सोच रहा था– "जिन्हें मैं मारना चाहता था, वे मेरे लिए कितने स्नेहपूर्ण हैं, कितने दयालु हैं!" वह महात्मा बुद्ध के चरणों में सिर टिकाकर बोला– "महात्मन, अभी तक मुझे प्रेम का मार्ग

दिखाने वाला कोई नहीं मिला था, परंतु आपके व्यवहार ने मुझे जीत लिया। मैं पापी हूँ। बताइए, मेरा कल्याण कैसे हो सकेगा?"

महात्मा बुद्ध ने उसे प्रेम से ऊपर उठाया और कहा– "तुम प्राणिमात्र से प्यार करो। अपना जीवन परोपकार में लगा दो। इसी में तुम्हारा कल्याण है।"

अंगुलिमाल ने हिंसा का रास्ता त्यागकर अहिंसा, सत्य और धर्म का मार्ग अपना लिया। वह बौद्ध-भिक्षु बन गया और धर्म के मार्ग पर चलते हुए तथा धर्म का प्रचार करते हुए उसने अपना सारा जीवन बिता दिया।

मौखिक प्रश्न

प्रश्नों के उत्तर बताइए –

(क) महात्मा बुद्ध क्या कहा करते थे? *(मूल्यपरक प्रश्न)*

(ख) कौशल प्रदेश में कौन-सा डाकू था? उसने क्या प्रतिज्ञा कर रखी थी?

(ग) राजा प्रसेनजित की चिंता का क्या कारण था?

(घ) अंगुलिमाल किसकी कौन-सी बात सुनकर विस्मित रह गया? *(मूल्यपरक प्रश्न)*

(ङ) अंगुलिमाल ने हिंसा का रास्ता छोड़कर कौन-सा रास्ता अपनाया?

अभ्यास

पाठ से प्रश्न

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(क) अंगुलिमाल कौन था और उससे लोग क्यों डरते थे?

(ख) आनंद के मना करने पर भी महात्मा बुद्ध उस जंगल में क्यों गए जहाँ अंगुलिमाल रहता था?

(ग) बुद्ध को आते देख अंगुलिमाल ने क्या कहा?

(घ) अंगुलिमाल का हृदय-परिवर्तन किस प्रकार हुआ? *(मूल्यपरक प्रश्न)*

(ङ) महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल को कल्याण का क्या मार्ग बताया?

(च) अंगुलिमाल ने बाद में किन गुणों को अपना लिया? *(मूल्यपरक प्रश्न)*

2. प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का निशान (✓) लगाइए –

(क) कौशल की राजधानी का नाम क्या था?

☐ गोकुल ☐ अवंती ☐ श्रावस्ती

(ख) महात्मा बुद्ध के शिष्य का क्या नाम था?

☐ आनंद ☐ परमानंद ☐ प्रसेनजित

(ग) अंगुलिमाल से मिलने घने जंगल में मिलने कौन पहुँचे?

☐ राजा प्रसेनजित ☐ सैनिक ☐ महात्मा बुद्ध

(घ) अंगुलिमाल ने महात्मा बुद्ध से किसके कल्याण का मार्ग पूछा?

☐ दूसरों के ☐ अपने ☐ मनुष्यों के

(ङ) हिंसा का रास्ता त्यागकर अंगुलिमाल क्या बन गया?

☐ राजा ☐ किसान ☐ बौद्ध-भिक्षु

आपकी परख

क्या कभी कोई पापी भी महात्मा बन सकता है? अंगुलिमाल का उदाहरण सामने रखते हुए सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

अनुमान एवं कल्पना

यदि अंगुलिमाल के भय से महात्मा बुद्ध उससे मिलने जंगल में न जाते तो क्या होता? सोच-समझकर बताइए।